अबू बक्र सिद्दीक़ के जीवन की कुछ झलकियाँ

[*हिन्दी*]

لمحات من سيرة أبي بكر الصديق رضي الله عنه

[اللغة الهندية]

संकलन

अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

عطاء الرحمن ضياء الله

المكتب التعاوني للدعوة وتوعية الجاليات بالربوة

الرياض - المملكة العربية السعودية

इस्लामी आमन्त्रण एंव निर्देश कार्यालय रब्वा, रियाज़, सऊदी अरब

1429 - 2008

islamhouse.com

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मैं अति मेहरबान और दयालु अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ।

الحمد لله رب العالمين، والعاقبة للمتقين، والصلاة والسلام على المبعوث رحمة للعالمين، نبينا محمد وعلى آله وصحبه أجمعين، ومن تبعهم بإحسان إلى يوم الدين، أما بعد:

अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : **"तुम मेरी सुन्नत और मेरे बाद हिदायत याफ्ता (पथप्रदर्शित) ख़ुलफा-ए-राशिदीन की सुन्नत को दृढ़ता से थाम लो और उसे दाँतों से जकड़ लो।"** (अहमद, अबूदाऊद, तिर्मिज़ी, इब्ने मसजह)

खुलफा-ए-राशिदीन में सर्व प्रथम अबू बक्र सिद्दीक़, फिर उमर बिन ख़त्ताब, फिर उसमान बिन अफ्फान, फिर अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हुम हैं।

अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के जीवन की कुछ झलकियाँ

आप का नामः

शुद्ध कथन के अनुसार 'अब्दुल्लाह बिन उस्मान अल-क़ुर्शी अत्तैमी' है।

कुन्नियत : अबू बक्र

लक़ब : अतीक़ और सिद्दीक़ है।

कहा जाता है कि आप का लक़ब **'अतीक़'** इसलिए पड़ा कि आप बहुत रूपूवान (हसीन व जीमल) थे, या इसलिए कि भलाई के मामले में पुरातन थे। इसके अतिरिक्त और कारण भी बतलाए जाते हैं।

और **'सिद्दीक़'** लक़ब इसलिए पड़ा कि वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सच्चा मानने और आप पर ईमान लाने वाले मर्दों में सर्व प्रथम व्यक्ति हैं। तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आप का नाम 'सिद्दीक़' रखा।

इसी प्रकार अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को उनकी दया और मेहरबानी के कारण **'अव्वाह'** भी कहा जाता था।

आप का जन्म : आप आमुल-फील[1] के अढ़ाई वर्ष बाद पैदा हुए।

आप के गुण :

---

[1] इस से अभिप्राय वह वर्ष है जिस में अब्रहा (जो एथोपिया के राजा नजाशी की ओर से यमन का गवर्नर था) मक्का में खाना काबा पर चढ़ाई करने के लिए आया था और अल्लाह तआला ने उसे और उसकी फौज को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया था। यह ५७१ ई० के प्रथम तिमाही में घटित हुआ।

अबू बक्र रज़ियललाहु अन्हु गोरे और दुबले-पतले आदमी थे, रूख्सार पर हल्के बाल थे, चेहरे पर गोश्त कम था, पेशानी उभरी हुई थी। मेंहदी और कत्म का खिज़ाब लगाते थे, वह एक रहम दिल और दयालू मनुष्य थे।

आप के फज़ाइल (विशेषताएँ) :

❖ **वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद इस उम्मत के सर्व श्रेष्ठ व्यक्ति हैं।**

इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा कहते हैं : हम नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समय काल में कुछ लोगों को कुछ पर प्रतिष्ठा (फज़ीलत) देते थे। चुनाँचे हम अबू बक्र को, फिर उमर बिन ख़त्ताब को, फिर उसमान रज़ियल्लाहु अन्हुम को फज़ीलत देते (सर्व श्रेष्ठ समझते) थे। (बुख़ारी)

❖ आप रज़ियल्लाहु अन्हु सर्व प्रथम ईमान लाए, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की संगत अपनाई, आप को सच्चा स्वीकार किया, कष्ट और यातना से पीड़ित होने के उपरान्त भी जब तक आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का में रहे, वह निरंतर आप के साथ रहें, और हिज्रत के दौरान आप के हमसफर रहे।

❖ **ग़ार (गुफा) में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ दो में दूसरा वही थे।**

अल्लाह तआला का फर्मान है :

﴿ثَانِيَ اثْنَيْنِ إِذْ هُمَا فِي الْغَارِ إِذْ يَقُولُ لِصَاحِبِهِ لاَ تَحْزَنْ إِنَّ اللهَ مَعَنَا ﴾

(سورة التوبة:٤٠)

''जबकि वह दोनों गुफा में थे और वह दो में से दूसरा था और अपने साथी से कह रहा था : गम न करो अल्लाह हमारे साथ है।'' (सूरतुत्-तौबह :४०)

सुहैली कहते हैं : क्या आप देखते नहीं कि किस प्रकार यह कहा किः चिन्ता मत कीजिए, यह नहीं कहा कि भय मत कीजिए? क्योंकि उनके अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ऊपर पर चिन्ता और गम के एहसास ने, उन्हें स्वयं अपने ऊपर भय का अनुभव करने से व्यस्त कर दिया।

बुख़ारी व मुस्लिम में अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस है कि अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनसे हदीस बयान करते हुए कहा : जब हम ग़ार में थे, तो मैं ने मुश्रिकों के पैरों को अपने सिर के ऊपर देखा। इस पर मैं ने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल! अगर उन में से किसी ने अपने पैरों की ओर दृष्टि किया तो वह हमें अपने पैरों के नीचे देख ले गा। तो आप

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः **"ऐ अबू बक्र! तुम्हारा उन दो के बारे में क्या विचार है जिन का तीसरा अल्लाह है।"**

तथा जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने गुफा में दाखिल होने का इरादा किया तो अबू बक्र आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पहले दाखिल होकर गुफा का निरीक्षण किया; ताकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कोई कष्ट न पहुँचे।

तथा जब वो दोनों हिज्रत के रास्ते पर चलने लगे तो अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु कभी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने चलते तो कभी आप के पीछे, कभी आपके दायें चलते तो कभी आप के बायें।

- **जब उन्हों ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ हिज्रत किया तो अपने सम्पूर्ण धन को अल्लाह के रास्तें में ले लिया।**

- **वह सर्व प्रथम ख़लीफा–ए–राशिद हैं।**

खुलफा–ए–राशिदीन के विषय में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फर्मान है : **"तुम मेरी सुन्नत और मेरे बाद हिदायत-प्राप्त (पथप्रदर्शित) खुलफा-ए-राशिदीन की सुन्नत को दृढ़ता से थाम लो और उसे दाँतों से जकड़ लो।"**

मुसलमानों ने उन्हें **'रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़लीफा'** के लक़ब से सम्मानित किया।

- **आप रज़ियललाहु अन्हु की खिलाफत के विषय में नस्स मौजूद है**

(अर्थात् नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कथन द्वारा शुद्ध एंव स्पष्ट रूप से प्रमाणित है**)**

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी बीमारी की अवस्था में अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को आदेश दिया कि वह लोगों को नमाज़ पढ़ाया करें।

इसी प्रकार एक महिला नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आई और किसी चीज़ के बारे में आप से बीत-चीत की तो आप ने उसे कोई आदेश दिया। फिर वह कहने लगी : ऐ अल्लाह के रसूल ! यदि मैं आप को न पाऊँ तो आप का इस बारे में क्या कहना है? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : **"यदि तुम मुझे न पाओं तो अबू बक्र के पास आना।"** (बुख़ारी व मुस्लिम **)**

- **तथा हमें आप रज़ियल्लाहु अन्हु की इक़्तिदा का हुक्म दिया गया है।**

❖ अबू बक्र रज़ियल्लाहु उन लोगों में से हैं जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समय काल में फत्वा दिया करते थे।

इसी लिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें हज्जतुल-वदा से पहले वाले हज्ज में हज्ज का अमीर बनाकर भेजा।

तबूक के दिन नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के झण्डे को उठाने वाले अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ही थे।

❖ जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खर्च करने पर उभारा तो उन्हों ने अपना सम्पूर्ण माल अल्लाह के मार्ग में खर्च कर दिया।

❖ **उनके फज़ाइल में से यह भी है कि वह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के निकट सब से अधिक महबूब (प्रिय) व्यक्ति थे।**

अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु ने अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा : आप के निकट लोगों में सब से अधिक प्रिय कौन है? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा : आईशा। उन्हों ने कहाः मैं ने कहा : मर्दों में से कौन है? आप ने फरमाया : ''उनके पिता।'' (अर्थात अबू बक्र रज़ियलल्लाहु अन्हु) (मुस्लिम)

❖ **उनकी एक फज़ीलत यह भी है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन को अपना भाई बनाया था।**

❖ **उनकी फज़ीलत में से यह भी है कि अल्लाह तआला ने उन को पवित्र व सदाचारी घोषित किया है** (उन की प्रशंसा की है)।

अल्लाह तआला ने फरमाया :

﴿وَسَيُجَنَّبُهَا الْأَتْقَى الَّذِي يُؤْتِي مَالَهُ يَتَزَكَّى وَمَا لِأَحَدٍ عِندَهُ مِن نِّعْمَةٍ تُجْزَى إِلَّا ابْتِغَاء وَجْهِ رَبِّهِ الْأَعْلَى وَلَسَوْفَ يَرْضَى ﴾ (سورة الليل:١٧-٢١)

''और जो बड़ा मुत्तक़ी (ईश्भय रखने वाला, संयमी) होगा, उसे इस से दूर रखा जाए गा। जिस ने पवित्र होने के उद्देश्य से अपना माल दिया। उस पर किसी का कोई उपकार (एहसान) नहीं था जिस का वह बदला चुकाता। बल्कि उस ने तो मात्र अपने सर्वोच्च पालनहार की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए (माल खर्च किया) और शीघ्र ही वह प्रसन्न हो जाए गा।'' (सूरतुल्लैल :१७-२१)

उपर्युक्त आयतें अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के विषय में उतरीं।

❖ **तथा वह पहले पहल इस्लाम स्वीकारने वालों में से है, बल्कि वह सर्व प्रथम इस्लाम स्वीकारने वाले हैं।**

अल्लाह तआला का फर्मान है :

﴿وَالسَّابِقُونَ الأَوَّلُونَ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ وَالأَنصَارِ وَالَّذِينَ اتَّبَعُوهُم بِإِحْسَانٍ رَّضِيَ اللّهُ عَنْهُمْ وَرَضُواْ عَنْهُ وَأَعَدَّ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي تَحْتَهَا الأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ﴾ (سورة التوبة: ١٠٠)

''वो मुहाजिर और अन्सार जिन्हों ने सर्व प्रथम ईमान लाने में पहल किया और वो लोग जिन्हों ने श्रेष्ठ ढंग से उन का अनुसरण किया, अल्लाह उन से प्रसन्न हुआ और वो अल्लाह से प्रसन्न हुए, अल्लाह ने उनके लिए ऐसे बाग तैयार कर रखे हैं जिन में नहरें जारी हैं, वो उन में सदैव रहें गे, यही बहुत बड़ी सफलता है।'' (सूरतुत्-तौबा :१००)

- ❖ **नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भी उनके सदाचारी और पवित्र होने की प्रशंसा की है।**
- ❖ **तथा उन के फज़ाइल में से एक यह भी है कि उन्हें स्वर्ग के सभी द्वार से बुलाया जाए गा।**
- ❖ **उनके फज़ाइल में से यह भी है कि उन्हों ने (ढेर सारे) भलाई के काम एक ही दिन में एकत्र कर लिए।**

आपके कार्य (उपलब्धियाँ):

- ™ उनके महान कार्यों में से उनका इस्लाम स्वीकार करने में पहल करना, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ हिज्रत करना और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मृत्यु के दिन साबित-क़दम (सुदृढ़) रहना है।
- ™ हिज्रत से पूर्व उनके कार्यों में से यह है कि उन्हों ने सात ऐसे लोगों को आज़ाद कराया जिन्हें अल्लाह के मार्ग में कष्ट दिया जा रहा था, उन्हीं में से बिलाल बिन रबाह भी हैं।
- ™ खिलाफत की बाग डोर संभालने के पश्चात उनके महान कार्यों में से मुर्तद्दीन और ज़कात देना बन्द कर देने वालों से जंग करना है।
- ™ आप के समय काल में शाम और ईराक़ के अन्दर फुतूहात हुईं।
- ™ आप के शासन काल में क़ुरआन को एक पुस्तक में एकत्र किया गया, आप ने ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु को क़ुरआन एकत्र (संग्रह) करने का आदेश दिया।

आप का ज़ुह्द[1] :

अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की मृत्यु इस हालत में हुई कि उन्हों ने एक दिरहम या दीनार नही छोड़ा।

वरअ्[2] :

अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु साहिबे वरअ् और दुनिया में ज़ाहिद थे, यहाँ तक कि जब उन्हों ने खिलाफत की बाग डोर संभाली तो जीविका ढूँढ़ने के लिए बाहर निकले, तो उमर रज़ियल्लाहु अन्हु उन्हें वापस ले आए और इस बात पर सहमत हो गए कि खिलाफत का बोझ उठाने के बदले उनके लिए बैतुल माल से जीविका जारी कर दी जाए।

आप की मृत्यु :

जुमादल-ऊला, सन् १३ हिज्री में सोमवार के दिन आप रज़ियल्लाहु अन्हु का देहान्त हो गया, उस समय आप ६३ वर्ष के थे। अल्लाह तआला आप से प्रसन्न हो और आप को प्रसन्नता प्रदान करे।

(अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह)*

atazia75@gmail.com

[1] **ज़ुह्द**: दुनिया और उस के उपकरणों में अरूचि रखने को ज़ुह्द कहते हैं, जो इस्लाम धर्म में एक सराहनीय गुण है।

[2] **वरअ्** : दरअसल हराम (निषिद्ध) चीज़ों से बचने और उन से दूर रहने को वरअ् कहते हैं। फिर इसका प्रयोग हलाल और वैध चीज़ों से बचने के लिए किया जाने लगा। अर्थात् आदमी अपने धर्म के प्रति सावधानी से काम लेते हुए ऐसे हलाल और वैध कामों से दूर रहता है जो संदिग्ध होते हैं, या उनके कारण लोग उसके बारे में बदगुमानी (बुरी धारणा) में पड़ सकेते हैं।